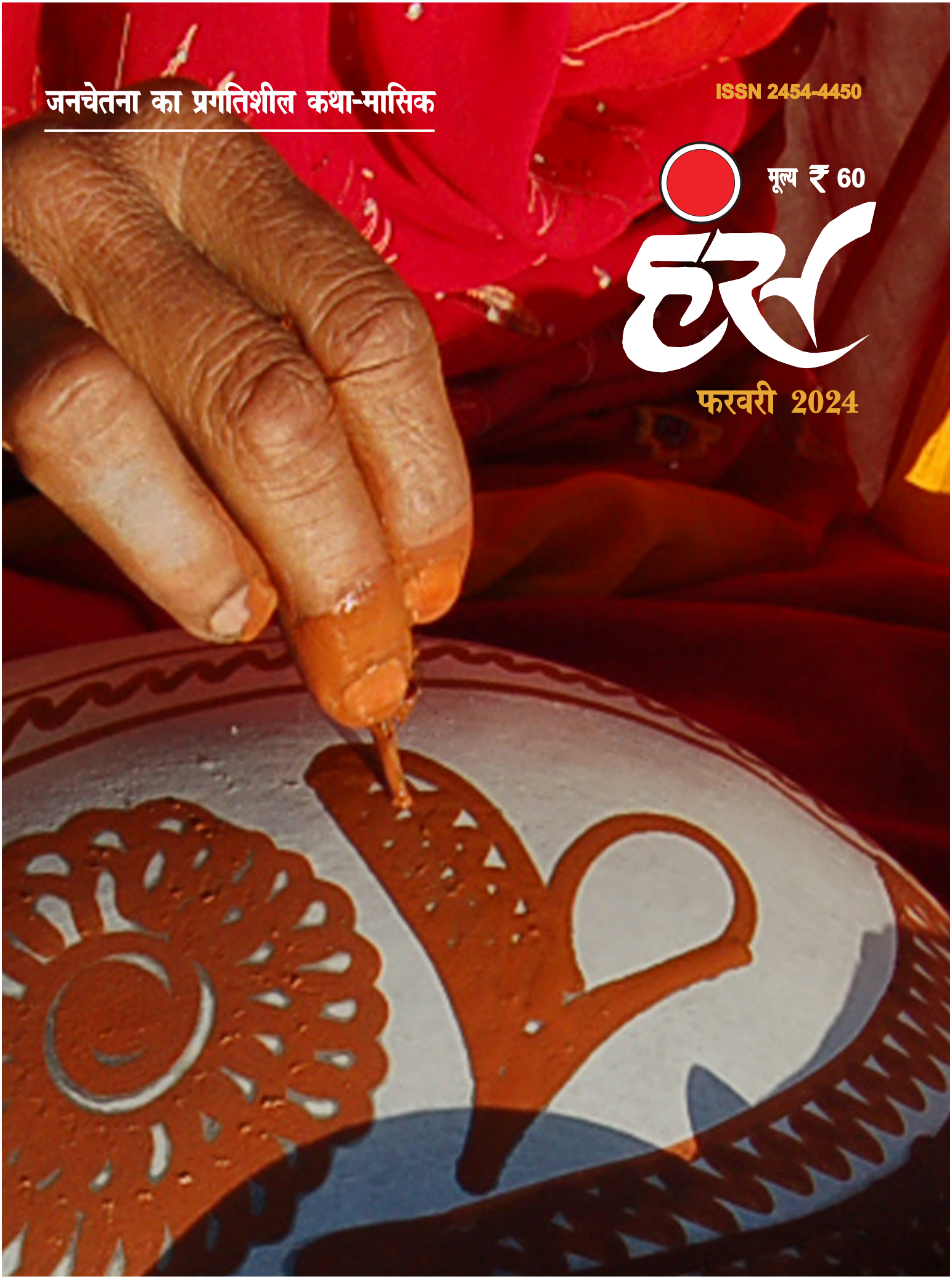

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

फरवरी 2024

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
विकेश निझावन, संदीप राशिनकर, सिद्धेश्वर, शैलेंद्र सरस्वती

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट :www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

फरवरी, 2024

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-448 वर्ष : 38 अंक : 7 फरवरी 2024

आवरण : बंशीलाल परमार

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. बौखलाती दुनिया : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

न हन्यते
10. करता हूं अंतिम नमस्कार : राजेन्द्र दानी

मुड़-मुड़ के देख
12. घटना : विश्वजीत
(हंस, अक्तूबर 1986)

आने वाले दिनों के सफ़ीरों के नाम
16. रास्ते मालूम नहीं होते, भटककर ढूंढ़ना होता है: (विनोद कुमार शुक्ल से असद ज़ैदी का संवाद)

कहानियां
24. कहां जाएगी ! : गोविन्द मिश्र
28. कतरनें : रजनी गुप्त
40. नर्सरी : मनीषा कुलश्रेष्ठ
46. असूज का एक दिन : दीपिका घिल्डियाल
50. ज़ी-होश : किंशुक गुप्ता
64. ग़मज़दा संतरों की सरज़मीन : ग़स्सान कन्फ़ानी (फ़िलिस्तीनी कहानी) (अनुवाद : शकील सिद्दीक़ी)

कविता
62. मृदुला सिंह
63. राहुल राजेश, किरण अग्रवाल, कमल जीत चौधरी

लेख
68. क्यों दरक रहे हैं लोकतंत्र? : सतीश बलराम अग्निहोत्री

लघुकथा
77. अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'
83. रंजना जायसवाल

ग़ज़ल
23. इंदु श्रीवास्तव

परख
71. हरिशंकर परसाई के जीवन का महाकाव्यात्मक आख्यान : हरियश राय
75. वृंदावन के सफेद प्रेतों की त्रासद कथा : संतोष दीक्षित
78. हद-बेहद विलोम जोड़ों की पूरकता : विद्यानिधि छाबड़ा
81. सभ्यता की असाधारण गति से कदमताल : शशिभूषण मिश्र
84. समलैंगिकता विमर्श का पता देती कहानियां : नवनीत नीरव
87. इंसानियत रचती कहानियां : रमेश चंद मीणा

रेतघड़ी
91-97

बौखलाती दुनिया

हर भारतीय परिवार को पक्का घर दिलवाने का वादा पूरा होने से बेशक अभी कोसों दूर है, लेकिन मर्यादा पुरुषोत्तम के लिए सरकार ने बढ़िया आवास का इंतजाम कर दिया है. अधिकांश चुनावी वादों के जुमला साबित हो जाने के बाद आखिर उन्हीं के आशीर्वाद से 2024 में नौका पार लगेगी. इस राम-बाण की काट कोई खोज सके तो खोज ले! वैसे इस 'शर्तिया इलाज' के अलावा भी जादूगर की आस्तीन में अनेक इक्के हैं. ध्रुवीकरण कराते धार्मिक बखेड़े हों, दंगे-फसाद हों या फिर जंग, सारी डोरियां अपने गोगिया पाशा की उंगलियों में लिपटी पूरी व्यवस्था को नचा रही हैं. उधर धर्मनिरपेक्ष संविधान को खामखां रौंद डालने की जरूरत भी नहीं थी! भईया, बदल डालते! ऐसे भी बचा ही क्या है. बेशक शुरुआत कांग्रेसियों ने कर दी थी और वे कितना भी दूध का धुला बनने का स्वांग रचते रहें, लोगों को आसानी से हजम नहीं होगा. वैसे भी ऊपर का दूध मनुष्य का नैसर्गिक आहार नहीं रहा है. और विशेषज्ञों की मानें तो विश्व की जनसंख्या का 68 प्रतिशत हिस्सा दूध के लैक्टोज को सहज ग्रहण करने (लैक्टोज एब्जॉर्पशन) में असक्षम होता है. गऊ परिवार माने चाहे ना माने!

खैर, इस बीच मालदीव में जो कुछ घटा या घट रहा है वह मालदीव की सरकार की आत्मघाती मूर्खता ही कहलाएगा और इसमें भारत का कठोर रुख बिलकुल भी अनुचित नहीं जान पड़ता. वैसे यह पूरा प्रकरण हमें अपने गिरेबान में भी झांकने पर मजबूर करता है कि एक धर्म विशेष के प्रति नफरत का जो खेल हम खेल रहे हैं उसके परिणाम क्या-क्या आयाम ले सकते हैं. साथ ही समय-समय पर विदेश नीतियों की निर्मम समीक्षा और यथोचित सुधार एक अति आवश्यक प्रक्रिया है जो न मालूम कहां तक व्यवहार में लाई जाती है. बीते सालभर में ही अनेक मोर्चों पर हमारी नादानियों से खासी भद्द पिटी है. भक्त समुदाय और गोदी मीडिया बेशक रेत में सर घुसाए शुतुरमुर्गों की तरह उन्हें अनदेखा करते रहें.

•

गज़ा पट्टी में 7 अक्तूबर 2023 से आरंभ हुए जलजले ने अब तक हजारों लोगों को लील लिया है, लाखों बेघर हो चुके हैं. यूं इस त्रासदी के बीज यूरोपीय मुल्कों के 'यहूदी खाज' से छुटकारा पाने के शताब्दियों पुराने खयाल के साथ ही पड़ गए थे. प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत ऑटोमन साम्राज्य की पराजय और फ़िलिस्तीनी भूखंड के ब्रिटेन की झोली में गिर जाने के बाद इस सपने को तेजी से अमलीजामा पहनाया जाने लगा. दूसरे विश्वयुद्ध के बाद 1948 में इज़राइल को हथियारों और सामरिक तकनीकी से लैस कर, अपनी असली जिम्मेदारियों से बेशर्मी से भाग जाने वाली उन महाशक्तियों ने विश्व में एक नए फ्रैंकंस्टाईन को जन्म दे दिया. नात्सियों-फासिस्टों से लेकर सोवियत सत्ता

तक के हाथों अकल्पनीय हिंसा का शिकार बने यहूदी विश्वभर की सहानुभूति बटोरते कब खुद बड़े नरपिशाच में तब्दील हो गए, विश्व को पता ही नहीं चला. शिशुओं, वृद्धों और स्त्रियों तक का निर्ममता से वध करने में निपुण इजराइली सेना और सरकार की नृशंसता का यह आलम है कि उनके सबसे बड़े खैर-ख्वाह अमेरिका और उसके राष्ट्रपति जो बाइडेन तक को इस मुद्दे पर रह-रह कर परस्पर विरोधी बयान जारी करने पड़ते हैं. यह कूटनीति की हार है या गुंडागर्दी की जीत कहना मुश्किल हो जाता है.

इज़राइल और उसके अतिवाद के जवाब में उभरे हमास–दोनों द्वारा निर्मित अराजकता पूरे मध्य पूर्व पर फैलती जा रही है. ग़ज़ा में हो रही इज़राइल की असंगत ध्वंसात्मक कार्रवाई की प्रतिक्रिया में लेबनान के लड़ाकों के बाद यमन के हूती आक्रामकों ने भी येरुशलम पर हल्ला बोल दिया है. पिछले नवंबर से वे लाल सागर से गुजरने वाले इज़राइली गुट के पोतों को निशाना बना रहे हैं. उधर ऑस्ट्रेलिया, बहरीन, कैनेडा और नीदरलैंड सहित ब्रिटिश-अमेरिकी गठबंधन भी जवाबी कार्रवाई में जुट गया है. चौतरफा विध्वंस जारी है. मध्य एशिया, लाल सागर और अफ्रीका तक रोज नए-नए मोर्चे खुल रहे हैं. ईरान ने पाकिस्तान सहित इराक़ में स्थित अमेरिकी-इज़राइली ठिकानों पर मिसाइलें दाग डाली हैं. मौका देख इस क्षेत्र की एक और बड़ी शक्ति तुर्की ने भी इराक़ और सीरिया में अपने पुराने विरोधी कुरदीश अतिवादियों पर धावा बोल दिया है. उधर अपने भाड़े के टट्टुओं सहित पुतिन अफ्रीका में लगातार खतरनाक खेल खेलते आ रहे हैं. यही हाल इनके विरोधियों का भी है. यूक्रेन में तो पिछले दो सालों से मौत का मंजर तारी है. एक रिपोर्ट के अनुसार 3 लाख रूसी सैनिक और 2 लाख यूक्रेनी जवान प्राणों की आहुति दे चुके हैं किंतु क्षितिज तक अंत दिखाई नहीं दे रहा. सब अपनी-अपनी मर्जी का भविष्य तलाश रहे हैं जहां दूसरे के लिए गुंजाइश नहीं बचती. खेल चाहे चमड़ी के रंग का चल रहा हो, अपने-अपने पंथ की श्रेष्ठता का, मूंछ की नोंक का या जमीन और सत्ता के लालच का...गौर से देखें तो यह स्पष्ट है कि अपनी जायज-नाजायज शिकायतें समेटे यह असंतुष्ट दुनिया बौखलाहट से भरती जा रही है–अपनी राजनीतिक- सामाजिक व्यवस्थाओं से, अपने आप से, अपने पड़ोसियों से, अपने वर्तमान से, अपने अतीत से, अपने आदर्शों से भी! एक ऐसी खिजलाहट है जिसके स्रोत का सचमुच किसी को नहीं पता. नतीजे में वे पूरी पृथ्वी को खरोंच-खरोंच कर लहूलुहान कर देना चाहते हैं. ऊपर से अल्पज्ञानी किन्तु परम पाजी नेताओं की अमरत्व पाने की लिप्सा! और दुनिया भर में बढ़ती अंधभक्तों की फौज इस आग पर मिट्टी का तेल छिड़कने का काम कर रही है. आलम यह है कि कल तक एक नई महामारी में करोड़ों लाशें गिन चुके लोग अभी और लाशें देखने को पागल हो उठे हैं. इन बेवकूफाना और आत्मघाती प्रवृत्तियों का उफान संभवतः तब तक नहीं रुकेगा जब तक कुकुरमुत्ते से बादलों तले कोई महाविनाश नहीं हो जाता.

●

वर्षों से अमृता बेरा तसलीमा नसरीन जी के कॉलम 'शब्दवेधी/शब्दभेदी' का अनुवाद करती रही हैं. निजी व्यस्तताओं के कारण वे इस जिम्मेदारी से अवकाश चाहती हैं. सबसे पहले तो अमृता जी के इस बहुमूल्य योगदान के प्रति 'हंस' का आभार, जिनकी वजह से हम 'शब्दवेधी/शब्दभेदी' जैसा लोकप्रिय स्तंभ वर्षों तक जारी रख सके. इसी तरह रश्मि रावत भी जिन्होंने 'हंस' के स्तंभ 'सृजन परिक्रमा' को पिछले अनेक वर्षों से रोचक बनाए रखा है, वे भी अवकाश पर जाना चाहती हैं. उनके भी इस निःस्वार्थ और महत्वपूर्ण योगदान के लिए हम उनके आभारी हैं.

इस बीच 'हंस' में एक प्रयोग के तौर पर 'हंस कथा-सम्मान' से सम्मानित चार रचनाकारों को 'हंस' के अगले चार अंकों का अतिथि संपादन सौंपा गया है. इसमें 'हंस' को एक नई ऊर्जा से भरने की कोशिश के साथ-साथ अपनी निजी व्यस्तताओं और एक अरसे से लंबित कुछ योजनाओं को पूरा करने का स्वार्थ भी शामिल है. मार्च 2024 से आरंभ होने वाली इस सीरिज के पहले संपादक पंकज सुबीर होंगे, अप्रैल अंक का संपादन कैलाश वानखेड़े का होगा, मई अंक का भार अनिल यादव के कंधों पर डाला गया है और जून अंक की रास योगिता यादव के हाथों में सौंपी गई है. चारों रचनाकार-संपादकों को अग्रिम बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं. इस चार महीने के वक्त में हमें तसलीमा जी के लिए बांग्ला से हिंदी के एक कुशल अनुवादक की तलाश पूरी करनी है. साथ ही 'सृजन परिक्रमा' स्तंभ के लिए भी योग्य चुनाव करना है.

●

राजेन्द्र यादव जी के संपादकीय 'मेरी तेरी उसकी बात' ('हंस' अगस्त 1986 से नवंबर 2013) तेरह खंडों में प्रकाशित किए गए हैं. पाठक 'हंस' कार्यालय से इन्हें मंगवा सकते हैं. विश्व पुस्तक मेले में तो ये उपलब्ध होंगे ही.